सत्यमेव जयते

67वीं गणतंत्र दिवस परेड

67th Republic Day Parade

26 जनवरी, 2016 (माघ 6 1937)

26 January, 2016 (6 Magha, 1937)

अमर
जवान

सत्यमेव जयते

67वीं गणतंत्र दिवस परेड
67th Republic Day Parade

26 जनवरी, 2016 (माघ 6, शक संवत् 1937)

26 January, 2016 (6 Magha, Saka Samvat 1937)

फ्रांसीसी सैन्य दस्ता

आज भारत अपना 67वाँ गणतन्त्र दिवस मना रहा है । हर्षोल्लास के इस विशेष अवसर पर हमारे सम्मानित मुख्य अतिथि, फ्रांस के राष्ट्रपति महामहिम श्रीमान फ्रांस्वा ओलांद सम्मिलित हैं । गणतन्त्र दिवस परेड में उनकी गरिमापूर्ण उपस्थिति, दोनो राष्ट्रों की पुरानी मित्रता व सामरिक साझेदारी को दी जाने वाली महत्ता का प्रमाण है ।

इस पारस्परिक विश्वास एवं सामन्जस्य का आज राजपथ पर प्रदर्शन होगा जब 136 फ्रांसीसी सैनिकों का दस्ता गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेगा । यह एक ऐतिहासिक क्षण है जब पहली बार किसी मुख्य अतिथि के देश के सैन्य दस्ते को गणतन्त्र दिवस परेड में भाग लेने के लिए आंमत्रित किया गया है ।

परेड में भाग ले रहा फ्रांसीसी सैन्य बैंड फ्रांसीसी सेना के "म्यूजिक ऑफ इंफैन्ट्री" से संबंधित है । इस सुरम्य बैंड के साथ-साथ 35वीं इन्फैन्ट्री रैजिमेन्ट का दस्ता राजपथ पर मार्च कर रहा है ।

French Military Contingent

Today India is celebrating its 67th Republic Day. Sharing our joy on this very special occasion is our esteemed guest, His Excellency, Mr. Francois Hollande, the President of the French Republic. His august presence at the Republic Day Parade signifies the value that both countries attach to their long-standing friendship and strategic partnership.

This spirit of trust and mutual understanding will be amply demonstrated today when the French Military Contingent of 136 soldiers participates in the Republic Day Parade. In every sense, this is a historic moment as it is for the first time that a military contingent from the country of the Chief Guest has been invited to participate in the Republic Day Parade.

The French Military band participating in the Republic Day Parade belongs to "Music of Infantry" of the French Army. Along with the impressive band, the contingent of 35th Infantry Regiment is marching smartly on Rajpath.

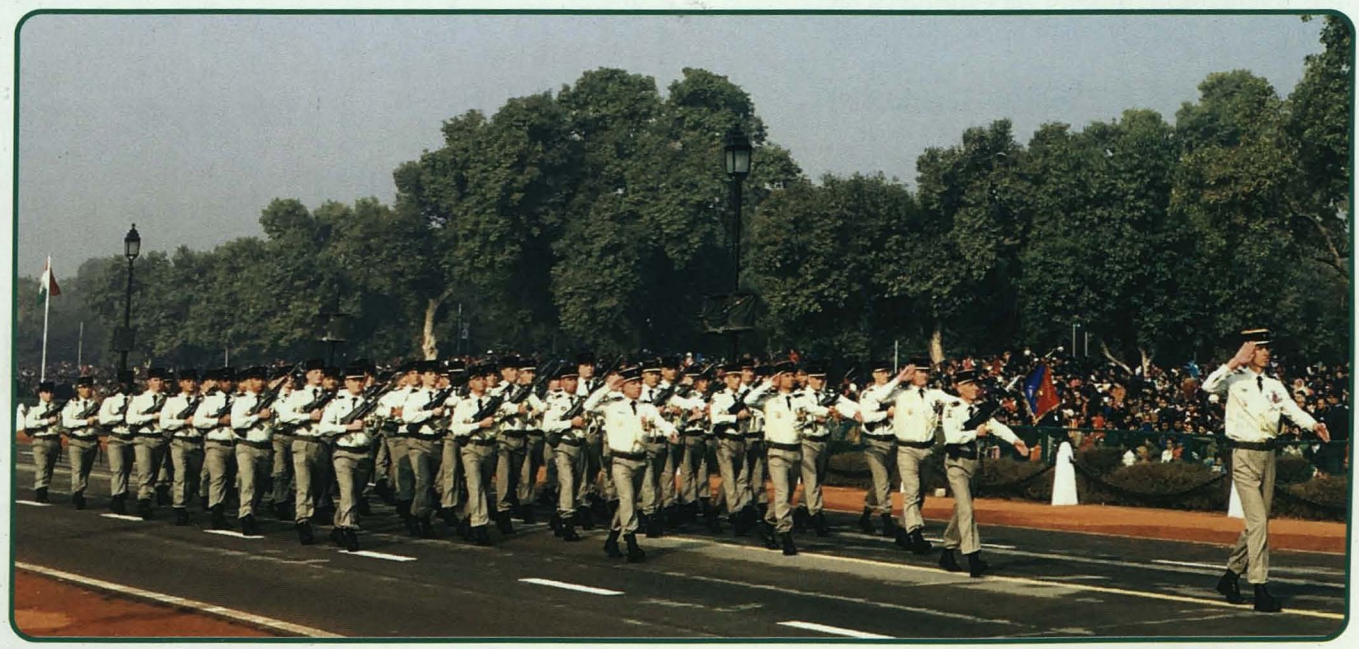

कार्यक्रम

0957 बजे — राष्ट्रपति का, मुख्य अतिथि, फ्राँस के राष्ट्रपति के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन ।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की अगवानी ।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि से रक्षामंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय ।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान ।

राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं । बैंड द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है ।

सांस्कृतिक झांकी ।

मोटर साइकिलों पर करतब ।

विमानों द्वारा सलामी ।

राष्ट्रीय सलामी ।

राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान ।

Programme

0957 Hrs. — The President, accompanied by the Chief Guest, the President of France, arrives in State.

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display.

Fly past.

National Salute.

The President, accompanied by the Chief Guest, departs in State.

परेड क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप-कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

फ्रांसीसी दस्ता

बैंड और मार्च करती हुई टुकड़ी

सेना

सवार दस्ता

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

टैंक टी-90

बॉल्बवे मशीन पिकेट

ब्रह्मोस

आकाश

स्मर्च

एकीकृत संचार इलेक्ट्रानिक युद्ध प्रणाली एवं एल आई सी उपस्कर युद्ध प्रणाली

एकीकृत शस्त्र प्रणाली से लैस उन्नत हल्के हेलीकॉप्टरों द्वारा सलामी

The Order of March

Showering of flower petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

French Contingent

Band and Marching Contingent

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Tank T-90

Ballbway Machine Pikate

BRAHMOS

AKASH

SMERCH

Integrated Communication Electronic Warfare System & LIC Equipment Warfare System

Fly Past by Advanced Light Helicopters including Weapon System Integrated

मार्चिंग दस्ते		Marching Contingents	
पैरा दस्ता		Para Contingent	
सिग्नलस दस्ता		Signals Contingent	
पैरा रेजीमेंट 1 सिग्नल प्रशिक्षण केन्द्र	: बैंड धुन 'गिरीराज'	Para Regiment 1 Signal Training Centre	: Band playing *'Giriraj'*
राजपूत दस्ता		Rajput Contingent	
गढ़वाल राइफल्स दस्ता		Garhwal Rifles Contingent	
ग्रिनेडियर रेजीमेंटल केन्द्र सिख लाई रेजीमेंटल केन्द्र	: बैंड धुन 'संविधान'	Grenadiers Regimental Centre Sikh LI Regimental Centre	: Band playing *'Samvidhan'*
असम दस्ता		Assam Contingent	
11 गोरखा राइफल्स दस्ता		11 Gorkha Rifles Contingent	
गढ़वाल राइफल रेजीमेंटल केन्द्र कुमाऊँ रेजीमेंटल केन्द्र	: बैंड धुन 'रश्मी'	Garhwal Rifle Regimental Centre Kumaon Regimental Centre	: Band playing *'Rashmi'*
डॉग स्क्वाड		Dog Squad	
भूतपूर्व सैनिकों की झांकी		Veteran's Tableau	
नौसेना		**Navy**	
नौसेना ब्रास बैंड	: बैंड धुन 'जय भारती'	Naval Brass Band	: Band playing *'Jai Bharati'*
नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी		Navy Marching Contingent	
झांकी (भारतीय नौसेना - समुद्रीय सुरक्षा तथा स्वदेशीकरण द्वारा भारत को सशक्त करना)		Tableau (Indian Navy - Empowering India through Maritime Security and Indigenisation)	

वायु सेना

वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी

वायु सेना बैंड : बैंड धुन 'गेलैक्सी राईडर्स'

वाहन दस्ता
(भारतीय वायु सेना द्वारा राष्ट्र की सेवा में तथा इससे परे किए गए मानवीय सहायता एवं आपदा राहत कार्य)

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन

कम दूरी के वायु एवं समुद्रीय निगरानी रडार

पनडुब्बी रोधी युद्ध टोरपीडो एवं उन्नत टोरपीडो रक्षा प्रणाली

अर्ध–सैनिक एवं अन्य सहायक सिविल बल

बैंड : सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा'

सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल ऊंटों की टुकड़ी

बैंड : सीमा सुरक्षा बल ऊंट : बैंड धुन 'हम है सीमा सुरक्षा बल'

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी

बैंड : असम राइफल्स : बैंड धुन 'असम राइफल्स गीत'

तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

Air Force

Air Force Marching Contingent

Air Force Band : Band playing *'Galaxy Riders'*

Vehicular Column

(Humanitarian Assistance and Disaster Relief Operations undertaken by Indian Air Force - In Service of the Nation and Beyond)

DRDO

Short Range Air & Sea Surveillance Radars

Anti-Submarine Warfare Torpedo & Advanced Torpedo Defence System

Para-Military and Other Auxiliary Civil Forces

Band : BSF : Band playing *'Sare Jahan Se Achha HindustanHamara'*

BSF Marching Contingent

BSF Camels Contingent

Band : BSF Camels : Band playing *'Hum Hain Seema Suraksha Bal'*

Assam Rifles Marching Contingent

Band : Assam Rifles : Band playing *'Assam Rifles Song'*

Coast Guard Marching Contingent

बैड : केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल	: बैड धुन 'देश के हम है रक्षक'	Band : CRPF	: Band playing *'Desh Ke Hum Hain Rakshak'*
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी (महिला)		CRPF Marching Contingent (Women)	
बैड : रेलवे सुरक्षा बल	: बैड धुन 'विजय भारत'	Band : RPF	: Band playing *'Vijay Bharat'*
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		RPF Marching Contingent	
बैड : दिल्ली पुलिस	: बैड धुन 'दिल्ली पुलिस'	Band : Delhi Police	: Band playing *'Delhi Police '*
दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी		Delhi Police Marching Contingent	
राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन सी सी)		**National Cadet Corps (NCC)**	
बैड : राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र	: बैड धुन 'कदम कदम बढ़ाऐ जा'	Band : Boys (NCC)	: Band playing *'Kadam Kadam Badhaye Ja'*
छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी		Boys Marching Contingent	
बैड : राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं	: बैड धुन 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा'	Band : Girls (NCC)	: Band playing *'Sare Jahan Se Achha Hindustaan Hamara'*
छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी		Girls Marching Contingent	
राष्ट्रीय सेवा योजना (एन एस एस)		**National Service Scheme (NSS)**	
सामूहिक पाईप और ड्रम बैड	: बैड धुन 'बोल वीर सैनानी'	Massed Pipes & Drums Bands	: Band playing *'Bol Vir Senani'*
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी		National Service Scheme Marching Contingent	

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकियां : तेईस

बहादुर बच्चे

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम:

1. शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली
2. सर्वोदय कन्या विद्यालय एवं राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, गांधीनगर, दिल्ली
3. दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर (महाराष्ट्र)
4. आर्मी पब्लिक स्कूल, दिल्ली कैंट, नई दिल्ली

मोटर साइकिलों पर करतब : भारतीय सेना

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारत मौसम विज्ञान विभाग

*मौसम अनुकूल रहने पर

The Cultural Pageant

Tableaux : Twenty Three

The Brave Children

National Bravery Award Winning Children in open Jeeps

Children's Pageant

School Children Items :

1. Shiksha Bharati Public School, Dwarka, New Delhi.
2. Sarvodaya Kanya Vidyalaya and Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Gandhi Nagar, Delhi.
3. South Central Zone Cultural Centre, Nagpur (Maharashtra)
4. Army Public School, Delhi Cantt., New Delhi

Motor Cycle Display : Indian Army

Fly-Past*

Release of balloons : India Meteorological Department

* *If weather conditions permit.*

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 67वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरंगी झाकिंयों का वर्ण-विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु-शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India celebrates its 67th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilization, cultural diversity and progress; it symbolises both India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India, capturing both the beauty of our landscape and our architectural heritage.

जागोर लोक नृत्य

गोवा राज्य की इस झांकी में राज्य के परंपरागत नृत्य के अलग-अलग रूपों को चित्रित किया गया है । रात भर चलने वाला जागोर लोक नृत्य गोवा के हिन्दु कुणबी एवं ईसाई गौड़ा समुदाय का पारंपरिक लोक नृत्य है जिसमें फसल के संरक्षण तथा समृद्धि के लिए दैवीय वरदान मांगा जाता है । पेरणी जागोर गोवा का प्राचीन मुखौटा नृत्य-नाटक है जिसे पेरणी परिवारों द्वारा अति कलात्मक, विभिन्न सामाजिक पात्रों, जानवरों, पक्षियों, अलौकिक शक्तियों, देवताओं तथा दैत्यों के पेंट किए हुए लकड़ी निर्मित मुखौटों का प्रयोग करके निष्पादित किया जाता है । गौड़ा जागोर नृत्य उनके सामाजिक जीवन की विभिन्न मनोदशाओं तथा मुद्राओं को प्रदर्शित करता है । इस नृत्य को पारंपरिक वाद्ययंत्रों के मोहक संगीत की धुन पर प्रस्तुत किया जाता है ।

कुछ जागोर नृत्यों में हिन्दु और ईसाई दोनों समाज के कलाकार एक साथ भाग लेते हैं जिसमें हिन्दु कलाकार अभिनय करते हैं और ईसाई कलाकारों द्वारा संगीत बजाया जाता है । ये नृत्य गोवा के लोगों के बीच विद्यमान साम्प्रदायिक सद्भावना की सजीव अभिव्यक्ति हैं ।

- गोवा

Jagor Folk Dance

Goa tableau depicts traditional dance forms of the state. Jagor-the night long performance of traditional folk dance-drama of Hindu Kunbi & Christian Gauda community of Goa, seeks the divine grace for protection and prosperity of crop. Perni Jagor is an ancient mask dance-drama of Goa, performed by Perni families, using well-crafted, painted wooden masks of various social characters, animals, birds, supernatural powers, deities, and demons. Gauda Jagor dance displays various moods and impressions of their social life through various characters. The performance is accompanied by vibrant music using traditional instruments.

Some Jagor performances have participation of both Hindu and Christian communities, whereby the characters are played by Hindus and musical support is provided by Christian artists. These dances are a vivid expression of the communal harmony existing amongst the people of Goa.

- GOA

गीर वन्यजीव अभ्यारण्य–एशियाई सिंह

गुजरात राज्य की इस झांकी में गीर वन्यजीव अभ्यारण्य जो एशियाई सिंहों का एकमात्र प्राकृतिक वास है, का चित्रण किया गया है । इस अभ्यारण्य ने हाल ही में अपनी स्थापना की स्वर्ण जयंती मनाई है । सरकार के अथक प्रयासों तथा स्थानीय मवेशी मालिकों की सहायता से इस अभ्यारण्य में वनस्पतियों तथा वन्यजीवों के संरक्षण के लिए एक बेहतरीन पारिस्थितकीय संतुलन स्थापित किया गया है । इन प्रयासों से सिंहों की संख्या बढ़कर 523 हो गई है जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है ।

प्रस्तुत झांकी का अग्रिम भाग एशियाई सिंह के जीवन आकार मॉडल को एक प्रभावशाली मुद्रा में पेश कर रहा है । मध्य भाग सिंह संरक्षण कार्यक्रम की सफलता को चित्रित कर रहा है । इस भाग में गीर सिंहों को गीर गाय पालने वाले मालदारी समुदाय के लोगों के साथ शांतिपूर्वक सह जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है । गीर वनों के सीदी समुदाय के लोगों को भी उनके पारंपरिक नृत्य को करते हुए दिखाया गया है । झांकी के पश्च् भाग में गीर अभ्यारण्य की विविध वनस्पतियों तथा वन्यजीवों, जिनमे 31 स्तनधारी प्रजातियां तथा 300 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ शामिल है, को प्रस्तुत किया गया है ।

- गुजरात

Gir Wildlife Sanctuary - Asiatic Lions

The tableau of Gujarat showcases the Gir Wildlife Sanctuary, the only abode of Asiatic lions that has recently marked Golden Jubilee of its foundation. Through relentless efforts of the Government and assistance of local cattle owners, a unique ecological balance has been established to preserve the flora and fauna of the sanctuary. This has resulted in a sharp rise in the number of lions to 523, which is a remarkable accomplishment.

The first part of tableau presents a life-size model of Asiatic Lion in its majestic posture. The middle portion showcases the success of the Lion Conservation Program. It shows the Gir lions co-existing peacefully with the people of Maldari community along with the Gir cows. The people of Sidi community of the Gir forests can also be seen performing their traditional dance. The rear portion of tableau shows diverse flora and fauna of the Gir Sanctuary which is home to 31 species of mammals and over 300 species of birds.

- GUJARAT

सागा दावा

सिक्किम में बुद्ध जयंती महोत्सव 'सागा दावा' के नाम से लोकप्रिय है । यह एक महत्वपूर्ण पर्व है जो भगवान गौतम बुद्ध के जन्म, बोधत्व और निर्वाण अथवा मोक्ष की प्राप्ति का प्रतीक है ।

इस त्यौहार के दिन, सिक्किम के बौद्ध समुदाय के लोग एक धार्मिक जुलूस निकालते हैं जिसमें वे गौतम बुद्ध के रथ और पवित्र ग्रंथों को कंधों पर लेकर मंत्रों का उच्चारण करते हुए चलते हैं । इन पवित्र ग्रंथों को 'कांग्यूर टेंग्यूर' कहा जाता है जिनमें 100 से अधिक खंडों में बौद्ध धर्मविधान (बुद्ध द्वारा दी गई शिक्षा) होते हैं । बुद्ध द्वारा दी गई इन शिक्षाओं का संस्कृत से तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया है । यह माना जाता है कि इन ग्रंथों का पाठ करने वाले लोग अपने जीवन में छोटी-मोटी बाधाओं और अड़चनों से पार पा जाते हैं ।

झांकी के अग्रभाग में प्रार्थना चक्र दर्शाये गए हैं जिन पर बौद्ध मंत्र एवं श्लोक अंकित हैं । ये चक्र प्रार्थना करने के धार्मिक प्रतीक हैं । इन चक्रों को घुमाने से सचेतन मन को अपार आनंद और शांति की प्राप्ति होती है । झांकी के पश्च् भाग में धार्मिक जुलूस की जीवंतता को दर्शाया गया है।

- सिक्किम

Saga Dawa

Celebration of Buddha Jayanti in Sikkim is popularly called 'Saga Dawa'. It is an important occasion that marks Gautama Buddha's birth, enlightenment and attainment of Nirvana or Moksha.

On this festive day, the Buddhist community of Sikkim takes out a religious procession carrying the chariot of Gautama Buddha and sacred scriptures on shoulders and chant mantras. These holy scriptures called 'Kangyur Tengyur' contain the Buddhist canons (teachings of Buddha) in more than 100 volumes. These teachings have been translated from Sanskrit to Tibetan. It is believed that the readers of these scriptures are benefitted through elimination of minor obstacles and hindrances in life.

The tableau's front portion contains the prayer wheels having rolls of mantras. These wheels are religious symbols for performing prayers. The action of rotating these prayer wheels brings immeasurable merit and relief to the conscious beings. In the rear portion, the liveliness of a religious procession has been depicted.

- SIKKIM

15

मेरा गाँव मेरा जहान

जम्मू एवं कश्मीर की इस झांकी में भारत सरकार के स्वच्छ एवं हरित मिशन के अंतर्गत फ्लैगशिप स्कीम - मेरा गांव मेरा जहां के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति तथा प्राकृतिक परिवेश में हुऐ परिवर्तन को दर्शाया गया है । यह योजना ग्रामीण जनमानस के बीच गांव में साफ-सफाई और हरियाली को बढ़ावा देने तथा पॉलिथीन के प्रयोग से बचने के लिए, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से होने वाले लाभों के बारे में जागरुकता पैदा कर रही है ।

यह झांकी कश्मीरी सेबों से भरी टोकरी, तथा पारंपरिक पोशाक धारण किए हुए तीन महिलाओं की प्रतिमाओं, जिनके हाथ में जम्मू के बासमती चावल, कश्मीरी केसर तथा लद्दाख की सूखी खूबानी है, के साथ आरंभ होती है । झांकी के पश्च भाग में कश्मीर के सेब बागानों में स्थानीय लोगों को सेबों को तोड़ने, रखने तथा पैकिंग करने एवं उनकी जीवन वृद्धि करने के लिए शीतगृह में भंडारण करने में व्यस्त दिखाया गया है ।

जम्मू एवं कश्मीर राज्य की इस झांकी में आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग से गांवों में समृद्धि तथा हरियाली के संवर्धन तथा इससे राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे विकास को प्रस्तुत किया गया है ।

-जम्मू एवं कश्मीर

Mera Gaon Mera Jahan

The tableau of Jammu & Kashmir showcases the transformation that has taken place in the economic condition and natural environment of the rural areas through the flagship scheme Mera Gaon Mera Jahan under the Clean and Green Mission of the Government of India. The scheme spreads awareness amongst the rural population about the benefits of conservation of natural resources, ways to promote cleanliness and greenery in the village and avoiding use of polythene.

The tableau begins with a basket of Kashmiri apples and statues of three women in their traditional costumes, holding Basmati rice from Jammu, Kashmiri saffron and dried apricot from Ladakh. In the rear portion, local people are shown engaged in picking, grading, and packaging of apples in the Apple Orchids of Kashmir, and storing them in cold storage to increase their shelf life.

The tableau of Jammu and Kashmir state depicts the development taking place in the rural sector of the state through adoption of modern technology and ushering prosperity and greenery in villages.

- JAMMU & KASHMIR

हवा महल

अपनी भव्यता के लिए विख्यात हवा महल पूरी दुनिया में पैलेस ऑफ विंड के नाम से प्रसिद्ध एक वास्तुशिल्पीय विरासत है । जयपुर के शासक महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने सन 1799 ई. में इसका निर्माण करवाया था । इसकी आकृति भगवान श्री कृष्ण के मुकुट के समान है । हवा महल 50 फीट ऊंची एक पांच मंजिला इमारत है जिसमें कई छोटी-छोटी खिड़कियां हैं जिन्हें झरोखा कहा जाता है ।

इस झांकी में महाराजा सवाई प्रताप सिंह को सामने के भाग में दिखाया गया है जबकि झांकी के दोनों ओर हवा महल की प्रतिकृति दिखाई गई है । कुछ महिलाओं को पनिहारिन लोकगीत गाते हुए दर्शाया गया है । झांकी में कला और दस्तकारी की महत्वपूर्ण दुकानें दिखाई गई हैं जहां कुछ पर्यटक भी देखे जा सकते हैं ।

- राजस्थान

Hawa Mahal

Renowned for its grandeur, 'Hawa Mahal' is famous as Palace of Wind in the entire world and is an architectural heritage. It was built in 1799 AD by the ruler of Jaipur Maharaja Sawai Pratap Singh. Designed in the form of crown of Shri Krishna, standing 50 feet high, it is a five storey building with several small windows known as Jharokhas.

In this tableau, Maharaja Sawai Pratap Singh is shown in the front, while the replica of Hawa Mahal is shown on both the sides of the tableau. Women are shown performing folk song Panihaarin. Famous art & craft shops are also showcased on the tableau with some tourists.

- RAJASTHAN

चंडीगढ़ – पहला नियोजित शहर

चंडीगढ़ की झांकी प्रसिद्ध फ्रांसीसी शिल्पकार ली कारबुज़ियर द्वारा योजनाबद्ध किए गये इस सुंदर शहर को दर्शाती है । यह झांकी चंडीगढ़ की श्रेष्ठ वास्तुशिल्पीय कृतियों एवं हरियाली को चित्रित करती है ।

सुरम्य रूप से शिवालिक की पादगिरियों में स्थित चंडीगढ़ शहर, शहरी आयोजना में सर्वोत्तम प्रयोगों में से एक के रूप में जाना जाता है तथा इसकी समूचे विश्व में प्रशंसा की जाती है । इसकी आधुनिक तथा अद्वितीय वास्तुकला पूरी दुनिया के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है । इस शहर की संकल्पना चार प्रमुख कार्यों - जीवनयापन, कार्य शैली, शारीरिक स्वस्थता, अभिसरण तथा परिसंचरण के आधार पर निरूपित की गई है । जहाँ आवासीय क्षेत्र जीवन के भाग को संगठित करता है वहीं कैपिटल कॉम्प्लैक्स, सिटी सेंटर, शिक्षा क्षेत्र व औद्योगिक क्षेत्र कार्य के भाग को संगठित करता है । खुले बाग बगीचे व अहाते शरीर की देखभाल के लिए है । सात भिन्न प्रकार की सडकें जो कि 7-वी के नाम से विख्यात है, संचार भाग को दर्शाती है।

झांकी के अग्र भाग में इस शहर के शासकीय प्रतीक को दिखाया गया है जो खुले आदान-प्रदान की विचारधारा को प्रदर्शित करता है । झांकी के पश्च् भाग में ली कारबुज़ियर की प्रतिनिधित्व श्रेष्ठ कृतियाँ जैसे कैपीटॉल परिसर, फोकस पॉइंट, उच्च न्यायालय तथा चंडीगढ़ विधान सभा को दिखाया गया है । प्रसिद्ध शिल्पकला रॉक गार्डन जो कि औद्योगिक और घरेलू अनुपयोगी व व्यर्थ वस्तुओं से निर्मित है, को भी देखा जा सकता है ।

- चण्डीगढ़

Chandigarh - The First Planned City

The tableau of Chandigarh portrays the city beautiful – Chandigarh, planned by the famous French Architect Le Corbusier. The tableau depicts architectural landmarks and greenery in Chandigarh.

Picturesquely located at the foothills of the Shivaliks, Chandigarh is known as one of the best experiments in urban planning that attracts a large number of tourists from all over the world. The conception of the city has been formulated on the basis of four major functions – Living, Working, Care of the Body & Spirit and Circulation. Residential sectors constitute the living part whereas the Capitol Complex, City Centre, Educational zone and Industrial area constitute the working part. The Leisure Valley Gardens and open court yards are for the care of the body and spirit. The circulation system comprises of seven different kinds of roads known as 7Vs.

The front portion of tableau presents the official symbol of the city which denotes 'Open to give and Open to receive'. The rear part of the tableau depicts various representative landmarks of Le-Corbusier such as the Capitol Complex, High Court and Chandigarh Legislative Assembly. The famous Rock Garden made from industrial, home waste and thrown away items can also be seen on the tableau.

- CHANDIGARH

उनाकोटी मूर्तिकला

त्रिपुरा की झांकी उनाकोटी में पाए जाने वाली विभिन्न प्रकार की चट्टानों पर नक्काशी कर बनाई गई विभिन्न कलाकृतियों को दृश्यजनक आकर्षक रूप में प्रदर्शित कर रही है ।

त्रिपुरा की राजधानी अगरतला से लगभग 186 कि.मी. पर स्थित, उनाकोटी शिल्पकला पुरातात्विक आश्चर्य का एक अद्‌भुत स्थान है । यह शैव तीर्थयात्रियों का आकर्षण केन्द्र है जिसका इतिहास ईसवी 7वीं से 9वीं शताब्दी के पहले का है । यहाँ एक पहाड़ी पर अनेक विशाल खड़ी चट्टानों पर नक्काशियां की गई हैं । इस स्थान पर बौद्धों के निवास के विशिष्ट प्रमाण हैं, साथ ही साथ यहाँ शिव के शीर्ष तथा गणेश की 30 फीट ऊँची विशाल आकृति भी पाई गई हैं । इन चट्टानी दीवारों में दुर्गा और विष्णु जैसे हिन्दु देवी-देवताओं की आकृतियाँ भी बनाई गई है । उनाकोटी चट्टानों पर की गई नक्काशी भारत में सबसे बड़ी बास-रीलिफ मूर्तिकला होने के लिए विशिष्ट है ।

त्रिपुरा के उनाकोटी को भारत के पर्यटन मानचित्र में उल्लेखनीय पर्यटक स्थल के रूप में शामिल किया गया है । दूर-दराज से पर्यटक और तीर्थ यात्री इन पुरानी मूर्तिकलाओं को देखने के लिए यहां भ्रमण के लिए आते हैं ।

- त्रिपुरा

Unakoti Sculptures

The tableau of Tripura displays in a visually attractive manner the different varieties of rock carvings found in Unakoti.

Located about 186 Kms from capital Agartala, Unakoti Sculptures of Tripura are an important site of archaeological wonder. It is Shaiva pilgrimage attraction and dates back to 7th to 9th centuries A.D. The site consists of several huge vertical rock-cut carvings on a hillside. The site shows strong evidence of Buddhist occupation but also has central Shiva head and imposing Ganesha figures having a height of 30 feet. The rocky walls also have carved images of Hindu pantheon like Durga and Vishnu. The Unakoti rock cut carvings have the distinction of being the largest bas-relief sculpture in India.

Unakoti of Tripura has been included in the tourism map of India as a remarkable tourists resort. Tourists and pilgrims from far and wide frequent the place with enthusiasm to see these ancient sculptures.

- TRIPURA

बोयटा बंदना

ओडिशा की झांकी स्वदेशी और विदेशी व्यापार में इस राज्य के प्राचीन समुद्री आधिपत्य का स्मरण कराती है और ओडिशा के व्यापारी समुदाय - साधवों के गौरवशाली बोयटा बंदना के त्यौहार को दर्शाती है ।

प्राचीन काल में कलिंग के नाम से जाना जाने वाला ओडिशा पुरातनकाल से ही स्वेदशी और विदेशी व्यापार का केन्द्र था । नौका चालन का विषद ज्ञान रखने वाले साधवों ने बाली, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, श्रीलंका, मलेशिया, चीन, बर्मा और थाइलैंड जैसे सुदूरवर्ती देशों के साथ गहरे व्यापारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए थे । प्राचीनकाल में वे कार्तिक पूर्णिमा के शुभ दिवस पर जहाज से समुद्री यात्रा प्रारंभ करते थे । ओडिशा के लोग इस अवसर को कार्तिक पूर्णिमा पर बोयटा बंदना त्यौहार के रूप में मनाते हैं । इस दिन वे ब्रह्ममुहूर्त के समय नदियों, तलाबों और समुद्र में केले के पत्तों से बनी नौकाओं को तैराते हैं ।

ओडिशा की झांकी उन पुराने दिनों में विश्व व्यापार में साधवों की भूमिका को दर्शाती है । इसमें साधवों की आदमकद मूर्तियां और उनके बक्से (संदूक) जो विदेशी यात्राओं के दौरान कीमती सामान और सामग्री रखने के काम आते थे दर्शाए गए हैं । झांकी के पश्च् भाग में उनके नौकाघर और व्यापार की गतिविधियों में व्यस्त साधवों को दर्शाया गया है।

- ओडिशा

Boita Bandana

The tableau of Odisha recalls the ancient maritime supremacy of the state in the inland and foreign trade and the glorious Boita Bandana festival of Sadhavas – the trading community of Odisha.

Odisha known in ancient times as Kalinga was the epicenter of the inland and foreign trade since times immemorial. With their sound knowledge of navigation, the Sadhavas had established strong trading, social and cultural ties with the distant lands of Bali, Java, Sumatra, Borneo, Sri Lanka, Malaysia, China, Burma and Thailand. In past, they began their journey by ships on the auspicious day of Kartik Purnima. The people of Odisha celebrate this occasion as festival of Boita Bandana on Kartik Purnima by floating boats made of banana branches in the river, ponds and sea in the wee hours.

The tableau of Odisha demonstrates the role of the Sadhavas in world trade during those olden times. It displays life size statues of Sadhavas with their boxes (Sinduks) meant for storage of goods and precious materials during overseas trade. The rear portion of the tableau contains their boat house and shows Sadhavas engaged in trading activities.

- ODISHA

बंगाल के बौल

बंगाल की इस झांकी में बंगाल के घुमन्तू चारणों- बौलों को दर्शाया गया है । बौल हिन्दु और मुस्लिम समुदायों से संबंध रखने वाले लोक गायक हैं जो शान्ति, भ्रातृत्व और अलौकिक दर्शन के संदेश प्रसारित करते हुए एक गांव से दूसरे गांव भ्रमण करते हैं । वे उस विशिष्ट आध्यात्मिक और संगीतमय परम्परा को प्रदर्शित करते हैं जिसका उद्गम भक्ति और सूफी आन्दोलन में निहित है ।

बौल सामान्यत: एकतारा, दोतारा, खमक, नुपुर, प्रेमजूरी, दुबकी आदि पारम्परिक संगीत वाद्ययंत्रों का प्रयोग करते हैं । आजकल उनके संगीत द्वारा बंगाल के गाँवों में सामाजिक संदेशों को पहुँचाया जा रहा है तथा सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता फैलायी जा रही है । वे पश्चिम बंगाल की लोक प्रसार प्रकल्प योजना का अभिन्न अंग हैं जिसके अंतर्गत लोक कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है । यूनेस्को द्वारा बौल शैली की पहचान 'मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत की श्रेष्ठ कृति' के रूप में की गई है ।

- पश्चिम बंगाल

Bauls of Bengal

The tableau of West Bengal displays Bauls - the wandering minstrels of Bengal. The Bauls are folk singers, coming from both Hindu and Muslim communities who travel from one village to another, spreading the message of peace, brotherhood and mystic philosophy. They represent a distinctive spiritual and musical tradition that has its roots in the Bhakti and Sufi movement.

Bauls commonly use traditional musical instruments like Ektara, Dotara, Khamak, Nupur, Premjuri, Dubki etc. In recent times, their music conveys social messages and spread awareness about government schemes in the villages of Bengal. They are an integral part of Lok Prasar Prakalpa scheme of West Bengal, under which financial assistance is provided to the folk artists. The Baul genre has been recognized by the UNESCO as one of the 'Masterpieces of the Oral and Intangible Heritage of Humanity'.

- WEST BENGAL

चम्पारण सत्याग्रह

बिहार राज्य की झांकी ब्रिटिश शासन के विरूद्ध महात्मा गाँधी के प्रथम सफल आन्दोलन - चम्पारण सत्याग्रह को प्रस्तुत कर रही है ।

चम्पारण प्रांत के नील के किसानों का अँग्रेज व्यापारियों द्वारा तिनकठिया प्रणाली के माध्यम से शोषण किया जा रहा था जिसमें उन्हें भूमि के तीन कट्ठों पर नील की खेती करने के लिए विवश किया जाता था। इस व्यवस्था से चम्पारण के किसानों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था क्योंकि उन्हें उपज का सही मूल्य अदा नहीं किया जाता था। इस प्रकार से अँग्रेज व्यापारी किसानों से धोखाधड़ी कर रहे थे । तिनकठिया प्रणाली से छुटकारा पाने के बदले किसानों से भारी मुआवजे की माँग की जाती थी जिसका भुगतान करने में वे असमर्थ थे। स्थानीय किसानो ने महात्मा गाँधी को इस अत्याचार के संबंध में बताया तथा चम्पारण में इस प्रणाली के खिलाफ आन्दोलन करने का आग्रह किया। गाँधी जी ने चम्पारण के जिला मजिस्ट्रेट के आदेश की परवाह किए बिना आन्दोलन आरम्भ किया जो कि जो कि भारत की भूमि पर ब्रिटिश शासन के खिलाफ उनका पहला सफल सत्याग्रह था।

झाँकी के अग्र भाग में युवा गाँधी जी को नील के खेतों के बीच में प्रर्दशित किया गया है। पृष्ठ भाग में गरीब एवं विवश नील के किसानों पर अँग्रेजों द्वारा बल एवं हिंसा का प्रयोग मुरालों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

- बिहार

Champaran Satyagrah

The tableau of Bihar state presents the "Champaran Satyagrah" by Mahatma Gandhi – his first successful movement against the British rule.

The British forced the peasants of Champaran to enter into lease agreement under the tin-kathiya system which compelled them to grow indigo on three kathas of their landholdings. But the peasants were not paid adequately for their produce. Harsh conditions were imposed upon farmers who wished to move out of the vicious tinkathiya system. The whole system was designed to exploit the farmers and maximise profits. Local peasants narrated their plight to Mahatma Gandhi and requested him to lead the agitation against this cruel practice. Undeterred by the threats of the British district magistrate, Gandhiji began 'Champaran Satyagrah' that marked his first successful movement against the British rule.

In the leading part of the tableau, a giant statue of Gandhi ji is shown amidst indigo plantations. The trailor portion and side murals depict British atrocities against the poor hapless farmers of Champaran.

- BIHAR

कोडागु–कर्नाटक का कॉफी उत्पादक जिला

कोडागु कर्नाटक राज्य का सबसे बड़ा कॉफी उत्पादक जिला है । कोडागु के कॉफी उत्पादन के महत्वपूर्ण योगदान के कारण भारत को विश्व में छठे सबसे बडे कॉफी उत्पादक का स्थान प्राप्त हुआ है । इस राज्य के लोग भारी संख्या में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कॉफी उद्योग से संबंधित प्रक्रियाओं जैसे बागानों में बीजों की बुवाई, रोपाई, खाद डालने, खेतों की निराई, गोड़ाई करने, कॉफी की फलियों को बीनने, प्रसंस्करण करने तथा अंतत: विपणन से जुड़े हैं । यह उद्योग बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करता है जो इस उद्योग की श्रमशक्ति का एक अहम् हिस्सा हैं ।

कर्नाटक राज्य की इस झांकी में कॉफी उत्पादन के विभिन्न चरणों - फलियों को तोड़ने से लेकर अंतिम उपभोग तक के कार्यों को खूबसूरती से चित्रित किया गया है । कोडावा समाज की महिलाओं द्वारा अपनी विशिष्ट वेशभूषा में, कोडागु का पारंपरिक लोकनृत्य इस झांकी की शोभा बढ़ा रहा है ।

कोडागु का प्राकृतिक सौंदर्य, विशाल बागान तथा स्थानीय कोडावा समाज की मानवजातीय पहचान देश-विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं ।

- कर्नाटक

Kodagu - The Coffee Land of Karnataka

Kodagu is the top coffee producing district of the state of Karnataka. Significant contribution of Kodagu in the coffee production has made India the sixth largest producer of coffee in the world. A large number of people of this state are engaged in various coffee industry related activities viz. raising the seedlings in nurseries, planting, manuring, weeding and plucking the coffee beans, processing and finally marketing of coffee. This industry provides employment opportunity to a large number of women who form the bulk of its labour force.

The tableau of Karnataka depicts the various stage of coffee production – starting from plucking of beans to final consumption. Kodava women folks of Kodagu in their distinct costumes accompany the tableau performing the traditional dance.

The natural beauty, vast plantations and distinct ethnic identity of the local Kodavas community attracts tourists from India and abroad.

- KARNATAKA

सफेद बाघ

मध्य प्रदेश को अपनी सघन वन संपत्ति तथा बाघों की बड़ी संख्या के साथ-साथ, देश में सफेद बाघों की नायाब प्रजाति का एकमात्र प्राकृतिक आवास होने का भी गौरव प्राप्त है।

'मोहन' के नाम से जाना जाने वाले पहले सफेद बाघ को वर्ष 1951 में रीवा जिले में देखा गया था। इसे रीवा के महाराजा मार्तण्ड सिंह द्वारा पकड़ा गया था। विश्व भर में पाए जाने वाले सभी सफेद बाघ मोहन के वंशज हैं। जनसाधारण को प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के बचाव व संरक्षण करने के बारे में शिक्षित करने व जागरूक बनाने के लिए मध्य प्रदेश सरकार रीवा शहर के समीप मुकुन्दपुर सतना नामक स्थान पर सफेद बाघ सफारी स्थापित करने जा रही है, जहाँ लोगों को सफेद बाघ को उसके प्राकृतिक परिवेश में देखने का अवसर मिलेगा।

मध्य प्रदेश की झांकी में सफेद बाघ को अन्य संबंधित प्रजातियों के साथ बीहड़ में दिखाया गया है। झांकी के पश्च् भाग में ईको-पर्यटन प्रदर्शित किया गया है जिसमें वनों की उचित क्षमता के अनुसार सीमित संख्या में पर्यटकों को वन की वनस्पति तथा वन्य जीवों की विविधता का आनंद उठाते देखा जा सकता है।

- मध्य प्रदेश

White Tiger of Madhya Pradesh

Madhya Pradesh with its dense forest cover and large number of tigers has also the honour of being the natural habitat of the rarest breed – the white tiger.

The first white tiger, popularly known as 'Mohan', was reported in the forests of Rewa district in year 1951 by King Martand Singh. All the white tigers present today are the progeny of Mohan. To educate and spread awareness amongst the masses about protection and conservation of nature and natural resources, Government of Madhya Pradesh is setting up a White Tiger Safari at a place called Mukundpur Satna near the city of Rewa, where the people will have the opportunity to see the white tigers in their natural habitat.

The tableau of Madhya Pradesh presents a model of white tigers and other associated species in the wilderness. Eco-tourism has been shown in the rear part of the tableau, in which the limited number of tourists as per carrying capacity of forests may be seen enjoying the floral and faunal diversity.

- MADHYA PRADESH

खैरागढ़ संगीत तथा कला विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ राज्य की यह झांकी खैरागढ़ संगीत तथा कला विश्वविद्यालय का परिचय देती है । यह विश्वविद्यालय एशिया में संगीत, नृत्य, ललित कलाओं तथा रंगशाला की विभिन्न विधाओं को समर्पित प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है ।

1956 में स्थापित इस विश्वविद्यालय ने वैश्वीकरण के इस युग में परम्परागत तथा आधुनिक कला के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए अथक प्रयास किए हैं । यह विश्वविद्यालय संगीत तथा ललित कलाओं को उन विद्यार्थियों के बीच आर्थिक रूप से संगत जीविका के विकल्प के रूप में विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जो दुनिया-भर से यहां आते हैं ।

यह विश्वविद्यालय शिक्षा के अलावा शास्त्रीय संगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत वाद्ययंत्रों, लोक नृत्य, लोक संगीत, परम्परागत मूर्तिकला तथा चित्रकारी इतिहास जैसे अनेक विषयों में शोध कार्य करने की सुविधा प्रदान कराता है ।

छत्तीसगढ़ राज्य की इस झांकी के अग्रिम भाग में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों द्वारा तैयार की गई मुरलीधर की मूर्ति प्रदर्शित की गई है । पश्च् भाग में कला तथा संगीत के विभिन्न रूपों के साथ विश्वविद्यालय के कलात्मक भवन को भी चित्रित किया गया है ।

- छत्तीसगढ़

Khairagarh Music and Art University

The tableau of Chhattisgarh depicts Khairagarh Music and Art University. This university is one of the oldest universities in Asia dedicated to various forms of music, dance, fine arts and theatre.

Established in 1956, this University has made strenuous efforts to strike a balance between traditional and modern art in this era of globalization. The university is committed to develop music and fine arts as economically relevant career option among the students who come here from across the world.

Apart from education, the university provides research facility on a wide range of subjects such as classical music, Indian classical musical instruments, folk dance, folk music, traditional sculpture and history of painting.

The front portion of the tableau presents a life size sculpture of Murlidhar prepared by students and teacher of the University. The rear portion showcases the artistic building of the University along with various forms of art and music.

- CHHATTISGARH

टोडा

तमिलनाडु राज्य की इस झांकी में तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में रह रहे एक छोटे जनजातीय समुदाय - टोडा की जीवनचर्या प्रस्तुत कर रहा है ।

भारत सरकार ने टोडा समुदाय की पहचान तमिलनाडु के छः आदिम जनजातीय समूहों में से एक के रूप में की है । वे गैर-भाषिक भाषा बोलते हैं और अपने विशिष्ट वेष, रीति-रिवाज और प्रथाओं के कारण काफी ध्यान आकर्षित करते हैं । 'मुंड' के रूप में प्रख्यात टोडा गांव, में अर्द्धनाल आकार की छोटे दरवाजे वाली कुटिया होती हैं । इस गांव में एक डेयरी मंदिर होता है जिसे 'तिरियर्ल' कहा जाता है । टोडा का एकमात्र व्यवसाय पशु पालन और डेयरी है । उनकी विशिष्ट परम्परागत वेशभूषा जो लाल और काली कढ़ाई वाले कपड़े के एक मात्र टुकड़े से बनी हुई होती है । टोडा लोग शाकाहारी होते हैं । टोडा महिलाओं की विशेषता उनके कन्धों तक लटकते घुंघराले बाल हैं ।

यह झांकी 12 वर्षों में एक बार खिलने वाले 'कुरिन्जी' के फूलों के मध्य निवास कर रहे तमिलनाडु के आदिम टोडा समुदाय को उनके प्राकृतिक परिवेश में प्रदर्शित कर रही है ।

- तमिलनाडु

Todas

The state of Tamilnadu in this tableau presents the life of Todas - a small tribal community living in the Nilgiri district of Tamilnadu.

The Government of India has identified the Todas as one of the six primitive Tribal groups of Tamilnadu. They speak a non-linguistic language and attract lot of attention due to their distinct appearance, manners and customs. The Toda village called as 'Mund' has small half barrel-shaped huts with a small doorway. The village has a dairy temple called 'Tirierl'. The sole occupation of Todas is cattle rearing and dairy-work. Their traditional dress is unique, consisting of just a single piece of cloth with red and black embroidery. Todas are vegetarians. A striking feature of the Toda women is the curly arrangement of their hair that flow down waving to the shoulders.

The tableau displays people of primitive Toda community of Tamilnadu in their natural environment residing amidst 'Kurinji' flowers that bloom once in 12 years.

- TAMILNADU

रम्मन का त्योहार

उत्तराखंड की यह झांकी चमौली जिले के सलूर - डूंगरा गांव में मनाये जाने वाले रम्मन त्योहार को प्रदर्शित कर रही है ।

अप्रैल माह में मनाये जाने वाले इस त्योहार को वर्ष 2009 में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत घोषित किया गया है । यह त्यौहार रामायण की मूल कहानी पर आधारित है । इस त्योहार के दौरान रामायण के चुनिंदा प्रकरणों का अभिनय लोक शैली में किया जाता है । रात्रि में, कलाकार विभिन्न महाकाव्यीय, ऐतिहासिक और काल्पनिक पात्रों के मुखौटे पहनकर भूम्याल देवता के मंदिर परिसर में नृत्य करते हैं । इस त्योहार के आयोजन में सामुदायिक पूजा, देव-यात्रा, लोक नाट्य, नृत्य, गीत, हास्य रचनाएं, मेलें आदि जैसे विभिन्न क्रियाकलाप तथा रस्में भी शामिल होती हैं ।

उत्तराखंड की झांकी का अग्रिम भाग विभिन्न प्रकार के मुखौटों के मध्य में भगवान नरसिंह देवता के मुखौटे को प्रदर्शित कर रहा है । झांकी के मध्य भाग में शोभायमान लोक कलाकार उत्तराखंड के परम्परागत लोक संगीत वाद्ययंत्र भंकोर को बजा रहे हैं । झांकी के पिछले भाग में भूम्याल देवता के मंदिर और हिमालय को चित्रित किया गया है ।

- उत्तराखंड

Festival of Ramman

The tableau of Uttarakhand displays the festival of Ramman celebrated in Salur-Dungra village of district Chamoli.

Celebrated in the month of April, this festival has been declared as a World Heritage by the UNESCO in the year 2009. The festival is based on the original story of Ramayan. During the festival, some selected episodes of Ramayan are performed in a folk style. In the night, the artists perform dance at temple complex of Bhumyal Devta wearing the masks of various epical, historical and imaginative characters. The celebration of festival also involves a variety of other activities and rituals like community worship, Dev-yatra, folk drama, dances, songs, comedies, fairs etc.

The front part of the Uttarakhand tableau displays the mask of God Narsingh Devta with assortment of other masks. Folk dance artists playing Bhankor – the traditional folk musical instrument of Uttarakhand adorn the middle part of the tableau. Rear part of the tableau carries the Temple of Bhumyal God and the Himalayas.

- UTTARAKHAND

ज़रदोज़ी – कशीदाकारी की अनुपम कला

उत्तर प्रदेश की यह झांकी मूल्यवान और अल्प-मूल्यवान सामग्रियों का प्रयोग करके उत्कृष्ट कशीदाकारी के माध्यम से वेशभूषा सामग्री को सजाने की ज़रदोज़ी के नाम से विख्यात परम्परागत भारतीय दस्तकारी को प्रदर्शित कर रही है ।

ज़रदोज़ी कशीदाकारी एक प्रभावशाली रूप से आलंकारिक और गूढ़ रूप से परतदार स्वर्ण जरी का कार्य है, जिसका चलन अत्यंत प्राचीन काल से चला आ रहा है । प्रारंभ में यह कशीदाकारी शुद्ध चांदी के तारों और वास्तविक सोने की पत्तियों से की जाती थी । तथापि, वर्तमान समय में मूल्यवान धातुओं की सीमित उपलब्धी के कारण, दस्तकार इसमें सोने व चांदी की पॉलिश की गई तांबे की तारों और रेशमी धागे का प्रयोग करते हैं ।

ज़रदोज़ी कशीदाकारी के उत्पाद को अंतिम रूप देने में अत्यधिक कौशल, धैर्य और कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है । उत्तर प्रदेश के दस्तकारों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी सीखी गयी, पेशे के रूप में अपनाई और हस्तांतरित की गई यह परम्परागत दस्तकारी लखनऊ तथा आस पास के क्षेत्रों के दस्तकारों के लिए आय का मुख्य स्रोत है । ऐसा माना जाता है कि यह भारत की प्राचीनतम और अति विपुल कशीदाकारियों में से एक है । इसे अवध के नवाबों और अन्य शाही परिवारों का संरक्षण प्राप्त था । समृद्ध हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अत्यंत लोकप्रिय होने के कारण ज़रदोज़ी के उत्पादों की अन्य देशों में भी मांग है ।

– उत्तर प्रदेश

Zardozi - The Unique Art of Embroidery

The tableau of Uttar Pradesh displays the distinguished traditional Indian craft of Zardozi - of decorating the dress material through exquisite embroidery using precious and semi-precious materials.

Zardozi embroidery is an impressively ornamental and profoundly-crusted gold threadwork that is practised since very olden times. Initially, the embroidery was done with pure silver wires and real gold leaves. However, due to limited availability of precious metals in current times, the craftsmen make use of a combination of copper wire, with golden or silver polish, and silk thread.

The final products of Zardozi embroidery require tremendous skill, patience and painstaking efforts. The traditional craft form - learnt, practised and passed over for generations by the artisans of Uttar Pradesh, is the main source of income for artisans of Lucknow and adjoining areas. It is believed to be one of the oldest and most lavish embroidery styles in India. It was patronized by the Nawabs of Awadh and other royal families. Being very popular among the affluent Hindu and Muslim, Zardozi products are in demand in other countries as well.

- UTTAR PRADESH

रोंगाली बिहू

रोंगाली बिहू अथवा बोहाग बिहू असम राज्य का सबसे लोकप्रिय त्योहार है । यह अप्रैल माह में वसन्त ऋतु में मनाया जाता है । रोंगाली बिहू त्योहार असम के नव वर्ष के आरम्भ का भी प्रतीक है । यह 'गारु बिहू' से प्रारम्भ होता है जो अभिभावी कृषि समाज में पशुओं के महत्व का प्रतीक है । त्यौहार का अगला दिन 'मनूह बिहू' नामघरों (प्रार्थना हाल), बुजुर्गों और बच्चों को नए वस्त्र प्रदान करके मनाया जाता है । युवकों के समूह जिन्हें 'हुजोरी' कहा जाता है, परम्परागत संगीत वाद्य यंत्रों ढोल, पेपा, गगाना की ताल पर नाचते-गाते दरवाजे-दरवाजे जाते हैं । वे गांव के परिवारों को आशीर्वाद देते हैं और गमोसा (गमछा), पान, सुपारी और परम्परागत मिठाइयों के अर्पण को स्वीकार करते हैं ।

यह झांकी, असम गांव की एक विशिष्ट कुटिया और अपने इस महत्वपूर्ण त्योहार में मगन असम के स्थानीय लोगों को दर्शा रही है । आंगन में, असम के नवयुवक और नवयुवतियां परम्परागत बिहू नृत्य करते हुए दिखाई दे रहे हैं और एक असमी युगल अपने घर में मित्रों और संबंधियों का उत्सव के लिए स्वागत कर रहा है ।

- असम

Rongali Bihu

Rongali Bihu or Bohag Bihu is the most popular festival of state of Assam. It is celebrated in spring season during the month of April. Rongali Bihu festival also marks the beginning of the Assamese New Year. It starts with the 'Garu Bihu' symbolizing the importance of cattle in a predominantly agrarian society. The next day of festival –'Manuh Bihu' is celebrated with offerings of new clothes to Naamghars (Prayer Hall), elders and children. Groups of youngsters called 'Husori' go door to door singing and dancing to the beat of traditional musical instruments – dhol, pepa, gagana. They bless the families in the village and accept the offerings of gamosa (gamcha), betel leaves, betel nuts and traditional sweets.

The Assam tableau showcases the local people of Assam engaged in celebration of their important festival in the backdrop of a typical hut in an Assamese village. In the court-yard, young boys and girls of Assam are seen performing traditional Bihu dance and an Assamese couple welcoming friends and relatives to their home for the festivities.

- ASSAM

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, जिन्हें स्नेह से बाबा साहब के रूप में जाना जाता है, एक महान दार्शनिक, सभा विशेषज्ञ, वक्ता, विद्वान, विधिवेक्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक थे । हमारे देश की एकता, अखण्डता और लोकतान्त्रिक संरचना को स्थापित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है । कोलम्बिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के ख्यातिप्राप्त पूर्व छात्र के रूप में वे भारतीय समाज में विद्यमान सामाजिक विभेदीकरण के विरुद्ध लड़ते रहे । वह हमें समाज के कमजोर वर्ग के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए हमारे वर्तमान प्रयासों को जारी रखने की प्रेरणा देते है ।

बाबा साहब ने समानता की अवधारणा की वकालत की । वह स्वतंत्र भारत के पहले विधि मंत्री तथा भारत के संविधान के प्रधान निर्माता थे । संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में, बाबा साहब ने नई राज-व्यवस्था की प्रत्येक अनिवार्य आवश्यकता की संकल्पना की थी ।

गणतंत्र दिवस की इस झांकी के माध्यम से कृतज्ञ राष्ट्र उनके 125वें जन्मदिवस वर्ष पर इस महान हस्ती को याद कर रहा है ।

- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय

Dr Bhimrao Ramji Ambedkar

Dr Bhimrao Ramji Ambedkar, affectionately known as Baba Saheb, was a great philosopher, parliamentarian, orator, scholar, jurist, economist, politician and social reformer. He played key role in establishing unity, integrity and democratic fabric of our country. A renowned alumnus of Columbia University and London School of Economics, he sustained fight against social discrimination, prevalent in the Indian society. He continues to inspire us in our present day endeavours to secure for the weaker sections their due rights in the society.

Baba Saheb advocated the concept of equality. He was independent India's first law minister and the principal architect of the Constitution of India. As chairman of the Constitution Drafting Committee, Baba Saheb envisioned every conceivable requirement of the new polity.

Through the Republic Day tableau, the grateful Nation commemorates this iconic personality in the 125th Birth Anniversary year.

- MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT

मेगावाट से गीगा वाट

नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय (एम एन आर ई) की यह झांकी वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट के नवीकरणीय उर्जा क्षमता लक्ष्य को प्राप्त करने की उनकी महत्वाकांक्षी परियोजना को उजागर करती है । नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा स्रोत, स्वच्छ, अक्षय और पर्यावरण-अनुकूल उर्जा स्रोत के रूप में पहली पसंद बनने के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किए गए हैं । वे प्रकृति को संरक्षित करते हैं और हरियाली को बढ़ाते हैं तथा मानव जाति के लिए अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धता को सुनिश्चित करते हैं । ये उर्जा स्रोत दूर-दराज गांव के एक किसान से लेकर शहर के मध्य एक कारखाने के लोगों; सौर उर्जा से चालित लैम्प से अध्ययन करने वाले बच्चे से लेकर सौर स्टेशन से चार्ज की गई इलैक्ट्रिक कार का प्रयोग कर रहे परिवारजनों प्रत्येक को लाभ देते हैं ।

भारत ने पहले ही लगभग 38 गीगावाट की सौर, हवा, लघु जल विद्युत तथा जैव-उर्जा की प्रभावशाली समग्र मौजूदा अधिष्ठापित क्षमता प्राप्त कर ली है । 175 गीगावाट की अधिष्ठापित क्षमता प्राप्त करने का विजन 2022 का उद्देश्य नवीकरणीय उर्जा क्षेत्र, रोजगार सृजन और कौशल विकास में तीव्र प्रगति करके भारत को बदलना है । इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय समुद्री, ज्वारीय उर्जा, हाइड्रोजन आदि जैसे नए क्षेत्रों में अनुसंधान और तकनीकी विकास की ओर अग्रसर है ।

- नवीन एवं नवीकरणीय उर्जा मंत्रालय

Mega Watt to Giga Watt

The tableau of the Ministry of New & Renewal Energy highlights its ambitious project of achieving renewable energy capacity target of 175 GW by the year 2022. The new and renewable energy sources have been accepted universally as the foremost choice, for being clean, inexhaustible and environment-friendly sources of energy. They preserve nature, promote greenery, and ensure good health and prosperity for the mankind. These energy sources benefit everyone from a farmer in a remote village to a factory in the heart of the city; from a child who studies with a solar lamp to a family using an electric car charged from a solar station.

India has already achieved impressing cumulative existing installed capacity of approximately 38 GW of solar, wind, small hydro and bio-energy. The vision 2022 - of achieving the installed capacity of 175 GW, aims to transform India through rapid strides in the renewable energy sector, job creation and skill development. To meet these targets, the MNRE is spearheading research and technical development in new areas such as ocean, tidal energy, hydrogen, etc.

- MINISTRY OF NEW & RENEWAL ENERGY

स्वच्छ भारत मिशन

भारत सरकार ने देश भर में स्वच्छता लाने के प्रयासों में तेजी लाने, बेहतर साफ-सफाई और भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाने के लिए 02 अक्तूबर 2014 को 'स्वच्छ भारत मिशन' की शुरुआत की थी । इस मिशन को दिनांक 02 अक्तूबर, 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य है। देश में बेहतर स्वच्छता और जनता के मन में साफ-सफाई के प्रति व्यवहारगत परिवर्तन के माध्यम से सम्पूर्ण सफाई लाने के लिए बनाई गई केन्द्रित कार्य योजना स्वतंत्रता के बाद भारत का पहला व सबसे बड़ा अभियान माना जा रहा है ।

झांकी 'स्वच्छ भारत' के मूल विषय पर आधारित है । झांकी में सबसे आगे स्वच्छ भारत अभियान का प्रतीक महात्मा गांधी जी का जिन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था का चिर-परिचित चश्मा है । झांकी के पिछले भाग में गांवों, शहरों, स्कूलों इत्यादि के सामूहिक प्रयासों और अभियान के अंतर्गत उठाए गए कदमों से लोगों को स्वच्छ, हरे-भरे, साफ-सफाई वाले वातावरण में आमोद-प्रमोद करते दिखाया गया है ।

- पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय

Swachh Bharat Mission

The Government of India launched the 'Swachh Bharat Mission' on 2nd October, 2014 to accelerate efforts to achieve universal sanitation coverage, improve cleanliness and eliminate open defecation in India. The mission aims to achieve these targets by 2nd October 2019. The mission is India's greatest initiative since independence for focussed action plan to bring about total cleanliness in the country through improved sanitation and by developing hygienic behaviour amongst the population.

The tableau is based on the theme of 'Swachh Bharat'. The front part of the tableau displays the logo of 'Swachh Bharat Mission' – the familiar spectacles of Mahatma Gandhi who envisioned the dream of a clean India. The rear portion of the tableau shows the citizens of the country basking in the clean, green and hygienic environment achieved in villages, cities, schools etc. through the concerted campaigns and measures.

- MINISTRY OF DRINKING WATER & SANITATION

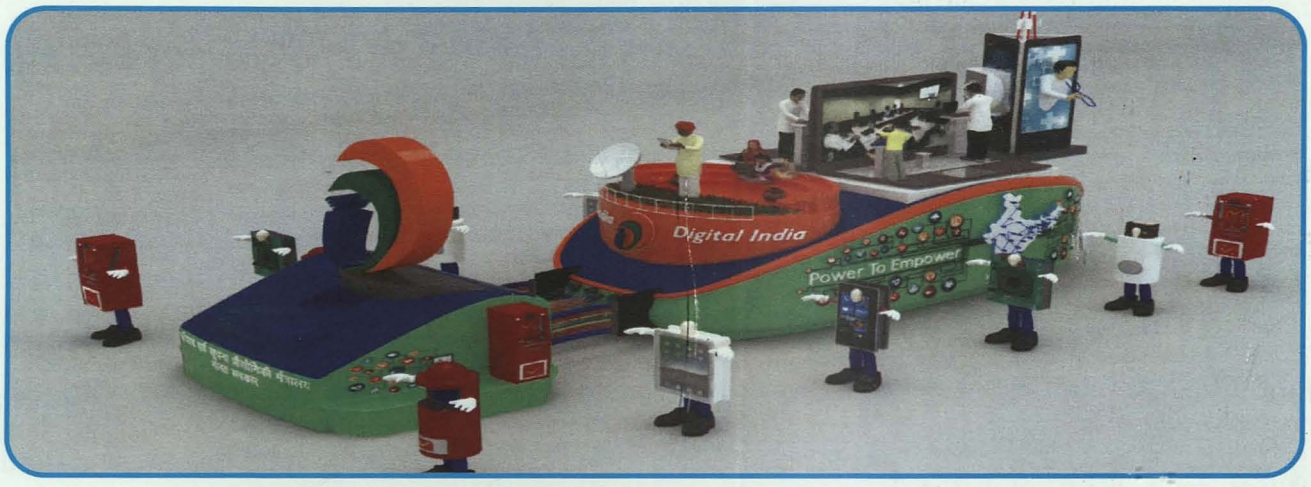

डिजिटल इंडिया

संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की इस झांकी में मंत्रालय की महत्वाकांक्षी परियोजना "डिजिटल इंडिया" की प्रस्तावित उपलब्धियों को दर्शाया गया है जिसका लक्ष्य देश को "डिजिटली एम्पावर्ड सोसाइटी और नॉलेज इकोनोमी" के रूप में परिवर्तित करना है । डिजिटल इंडिया परियोजना का मुख्य लक्ष्य भारतीय मेधाशक्ति का विकास, संवर्धन और प्रदर्शन करना तथा सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है ताकि तेजी से बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय माहौल में एक नए भारतीय युग का सूत्रपात किया जा सके ।

झांकी के अग्रभाग को एक प्रिंटर की तरह बनाया गया है जो इंडिया पोस्ट की डिजिटल सेवाओं को दर्शाता है । झांकी में शामिल अन्य प्रॉप विभिन्न गैजटो जैसे मोबाइल फोन, टेबलेट, यूएसबी ड्राइव, चिप्स आदि को दर्शाते हैं जिनकी सहायता से देश के नागरिक डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अन्तर्गत उपलब्ध कराई जा रही विभिन्न सेवाओं का लाभ उठाने में समर्थ हो सकेंगे । झांकी का आधार कम्प्यूटर के माउस की तरह बनाया गया है । झांकी के पश्च भाग में ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यक्रम की नागरिक केन्द्रित सेवाओं जैसे ई-हेल्थ, माईगॉव, भारत ब्रॉडबैंड, ई-शिक्षा को प्रदर्शित किया गया है ।

- संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

Digital India

The tableau of Ministry of Communication And Information Technology showcases the projected achievements of its ambitious project - Digital India that aims to transform the country into a Digitally Empowered Society & Knowledge Economy. The focus of Digital India project is to develop, promote and exhibit Indian Talent and leverage Information technology to bring about a new Indian era in the rapidly evolving international environment.

The front portion of the tableau has been designed like a printer to highlight Digital services of India Post. The props accompanying the tableau represent various gadgets like mobile phone, tablet, USB Drive, Chips, etc to enable the citizens of the country to gain access to various services offered under the Digital India program. The base of the tableau has been shaped as the mouse in a computer. The trailer portion depicts the citizen centric services of the program like e-Health, MyGov, Bharat Broadband, e-Education in rural areas.

- MINISTRY OF COMMUNICATION AND INFORMATION TECHNOLOGY

समावेशी और नैतिक निर्वाचक सहभागिता

'समावेशी और नैतिक निर्वाचक सहभागिता' के विषय पर आधारित भारत निर्वाचन आयोग की यह झांकी निर्वाचन आयोग के इस दिशा में उठाये गए नये कदमों जैसे मॉडल पोलिंग स्टेशन, दिव्यांग लोगों के लिए रैंप, सहायता केन्द्र, बुजुर्गों को विशेष सहायता, चिकित्सा सुविधाएं आदि को प्रतिबिंबित कर रही है जिसके द्वारा निर्वाचन प्रक्रिया को सरल, सुगम्य, जन-अनुकूल और एक उत्सवी अनुभव बनाया जा रहा है ।

झांकी के अगले भाग में, विभिन्न पहनावों में लोग भारतीय जनसंख्या की विविधता की अवधारणा को प्रदर्शित कर रहे हैं । अशोक स्तंभ, मतदाताओं द्वारा अपने मताधिकार का प्रयोग करते समय नीतिगत और विवेकसम्मत निर्णय को आगे बढ़ाने के संकल्प का प्रतीक है । यह झांकी मतदाताओं को ई-समर्थ सेवाएं प्रदान करने के एक डिजिटल प्लेटफार्म - 'राष्ट्रीय मतदाता सेवा पोर्टल' को भी प्रदर्शित कर रही है । चुनाव प्रक्रिया के दौरान दुर्गम भू-भाग में व्यक्तियों और सामग्री को भेजे जाने की प्रक्रिया को म्यूरलस (भित्ति चित्रों) द्वारा दर्शायी गई है । मतदाता शिक्षा और जागरूकता प्रक्रिया जो अब चुनाव प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण अंग है, को ई.वी.एम. सुविज्ञता शिविर के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।

- भारत निर्वाचन आयोग

Inclusive and Ethical Electoral Participation

Based on the theme of 'Inclusive and Ethical Electoral Participation', the Election Commission of India's tableau depicts the Commission's new initiatives in the form of Model Polling Station, ramps for persons with disability, help desks, special assistance for the elderly, medical facilities etc. which are making the electoral process easy, accessible, people-friendly and a festive experience.

In the front portion of tableau, the people in various costumes represent the concept of diversity of Indian population. The Ashoka Pillar symbolizes the resolve to promote ethical and informed decision by voters while exercising their franchise. The tableau also depicts the 'National Voters' Service Portal'- a digital platform to provide e-enabled services to the voters. The process of deployment of man and material in the difficult terrain during electoral process is depicted on both the side murals. The process of voter education and awareness which is now an integral part of election management has been depicted through an EVM familiarization camp.

- ELECTION COMMISSION OF INDIA

सशक्त महिला, सशक्त पंचायती राज एवं समाज

पंचायती राज मंत्रालय की यह झांकी महिलाओं की भागीदारी के माध्यम से प्राप्त स्थानीय शासन में हो रहे महत्वपूर्ण गुणवत्ता पूर्ण सुधारों को दर्शा रही है । ये महिला प्रतिनिधि सक्रिय रूप से अपनी नेतृत्व योग्यता को सिद्ध कर रही हैं तथा बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं, जीविका आदि के माध्यम से ग्रामीण समुदाय के लोगों के जीवन में बदलाव लाने हेतु निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रही हैं ।

यह झांकी ग्रामीण पंचायत की कुछ निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की कुछ वास्तविक उपलब्धियों को दर्शा रही है जिन्होंने महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास कर अपने समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारा । यह झांकी छत्तीसगढ़ के गौरमती ग्राम पंचायत तथा नासिक (महाराष्ट्र) में दारी ग्राम पंचायत की सफलता की कहानियों को प्रदर्शित कर रही है जो विकास के अनुकरणीय मॉडल बने हैं । तमिलनाडु के डिंडुगल पंचायत के उन्नत आंगनवाड़ी केंद्र, स्वच्छ भारत अभियान और युवतियों के लिए कम्प्यूटर साक्षरता के क्षेत्र में उनके द्वारा प्राप्त सफलता को भी झांकी में दर्शाया गया है ।

- पंचायती राज मंत्रालय

Sashakt Mahila, Sashakt Panchayati Raj evam Samaaj

The tableau of Ministry of Panchayati Raj showcases the significant qualitative transformation in local governance achieved through participation of women. These women representatives are actively proving their leadership abilities, influencing and participating in the decision making to transform the lives of village community through better education, healthcare facilities, livelihood, etc.

The tableau demonstrates some of the real achievements of the elected women representatives of village panchayats who took up important social issues to transform the socio - economic condition of their community. The tableau presents success stories of Gaurmati Gram Panchayat of Chhattisgarh and Dari Gram Panchayat in Nashik (Maharashtra) which have become emulative models of development. The tableau also showcases improved Anganwadi centre of Dindugal Panchayat in Tamilnadu, and the success achieved by them in the campaigns for Swachchh Bharat and Computer literacy for young girls.

- MINISTRY OF PANCHAYATI RAJ

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2015 के विजेता

Winners of National Bravery Award 2015

नाम	राज्य	Name	State
स्व. मास्टर गौरव कौदुजी सहस्त्रबुद्धे	महाराष्ट्र	Late Master Gaurav Kawduji Sahastrabuddhe	Maharashtra
कुमारी शिवमपेत रूचिता	तेलंगाना	Km. Shivampet Ruchitha	Telangana
मास्टर अर्जुन सिंह	उत्तराखण्ड	Master Arjun Singh	Uttarakhand
मास्टर रामदीनतारा	मिजोरम	Master Ramdinthara	Mizoram
मास्टर राकेशभाई शानाभाई पटेल	गुजरात	Master Rakeshbhai Shanabhai Patel	Gujarat
मास्टर अरोमल एस. एम.	केरल	Master Aromal S. M.	Kerala
मास्टर कशिश धननी	गुजरात	Master Kashish Dhanani	Gujarat
मास्टर बीधोवन	केरल	Master Beedhovan	Kerala
मास्टर नितिन फिलिप मैथ्यु	केरल	Master Nithin Philip Mathew	Kerala
मास्टर मॉरीस येंगखोम	मणिपुर	Master Maurice Yengkhom	Manipur
कुमारी एन्जेलिका येंसोंग	मेघालय	Km. Angelica Tynsong	Meghalaya
मास्टर साई कृष्णा अखिल किलाम्बी	तेलंगाना	Master Sai Krishna Akhil Kilambi	Telangana
कुमारी जोएना चक्रवर्ती	छत्तीसगढ़	Km. Joena Chakraborty	Chhattisgarh
मास्टर दिशान्त मेंहदीरत्ता	हरियाणा	Master Dishant Mehndiratta	Haryana
मास्टर सर्वानन्द साहा	छत्तीसगढ़	Master Sarwanand Saha	Chhattisgarh
मास्टर अभिजीत के. वी.	केरल	Master Abhijith K. V.	Kerala
मास्टर आनन्दु दिलीप	केरल	Master Anandu Dileep	Kerala
मास्टर मुहम्मद शमनाद	केरल	Master Muhammad Shamnad	Kerala
मास्टर मोहित महेन्द्र दल्वी	महाराष्ट्र	Master Mohit Mahendra Dalvi	Maharashtra
मास्टर नीलेश रेवाराम भील	महाराष्ट्र	Master Nilesh Revaram Bhil	Maharashtra
मास्टर वैभव रमेश घंगरे	महाराष्ट्र	Master Vaibhav Ramesh Ghangare	Maharashtra
मास्टर चोंगथम कुबेर मैती	मणिपुर	Master Chongtham Kuber Meitei	Manipur
मास्टर अबिनाश मिश्रा	उड़ीसा	Master Abinash Mishra	Odisha
मास्टर भीमसेन उर्फ सोनू	उत्तर प्रदेश	Master Bhimsen alias Sonu	Uttar Pradesh
स्व. मास्टर शिवांश सिंह	उत्तर प्रदेश	Late Master Shivansh Singh	Uttar Pradesh

धरती धोरा री

इस झांकी में शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली के विद्यार्थी राजस्थान के प्रसिद्ध लोकनृत्य, धरती धोरा री, के द्वारा मरूस्थलीय सैनिकों का गुणगान कर रहे हैं ।

राजस्थान के वीरतापूर्ण तथा पराक्रमपूर्ण साहसिक कार्यों का विद्वानों एवं इतिहासकारों द्वारा सदैव गुणगान किया गया है । यह भूमि उन बहादुर सैनिकों की साहसपूर्ण गाथाओं से ओतप्रोत है जो अपनी पवित्र मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं । राजस्थान के लोकनृत्यों, संगीत, भाषा तथा संस्कृति - सभी ने इस अन्तर्निहित वीर भावना तथा गौरव को आत्मसात किया है, जैसा कि राजस्थान के योद्धाओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है ।

इन स्कूली छात्रों की इस प्रस्तुती में राजस्थान के रंगारंग लोकनृत्य धरती धोरा री के द्वारा राजस्थान के वीर सैनिकों के साहसपूर्ण चरित्र की प्रशंसा और सम्मान करती है ।

- शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली

दलखई नृत्य

सर्वोदय कन्या विद्यालय और राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, गांधीनगर, दिल्ली के छात्र उड़ीसा के लोक नृत्य दलखई को प्रस्तुत कर रहे हैं । पश्चिमी उड़ीसा के सम्बलपुर के जनजातीय लोग अपने भैजुन्तिया और फागुनपुरी के त्योहारों पर दलखई नृत्य करते हैं । यह नृत्य देवी दलखई को अर्पित किया जाता है । यह सम्बलपुर के जनजातीय लोगों की रंग-बिरंगी संस्कृति और परम्परा पर प्रकाश डाल रहा है ।

इस नृत्य की रचना मुख्य रूप से धार्मिक प्रसंग अर्थात राधा-कृष्ण, रामायण, महाभारत आदि के इर्द-गिर्द घूमती है । इस नृत्य के माध्यम से नवयुवतियां देवी से अपने लिए उपयुक्त और सुन्दर वर की प्रार्थना करती है । महिला कलाकार रंग-बिरंगी सम्बलपुरी साड़ियों, पटका, गमछे और घुंघरू की पोशाकों में हिस्सा लेती हैं । पुरूष धोती, बंडी और गमछे में इस नृत्य को करते हुए दिखाई पड़ते हैं ।

- सर्वोदय कन्या विद्यालय और राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, गांधीनगर, दिल्ली

Dharti Dhora Ree

Students of Shiksha Bharati Public School, Dwarka, New Delhi present the popular folk dance of Rajasthan – Dharti Dhora Ree, to rejoice the brave spirit of the desert soldiers of Rajasthan.

Rajasthan's feats of bravery and valor have always been lauded by scholars and historians. The land is full of heroic tales of these brave soldiers, who are always found willing to lay down their lives in sacrifice for the holy soil of their motherland. The folk dances, music, language and culture of Rajasthan - all have dignified this inherent gallant spirit and pride, as displayed by the warriors of Rajasthan.

The colourful folk dance of Rajasthan Dharti Dhora Ree, presented by the school children, applauds and honours this bold character of the brave soldiers of Rajasthan.

- Shiksha Bharati Public School, Dwarka, New Delhi

Dalkhai Dance

The students of Sarvodaya Kanya Vidyalaya and Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Gandhinagar, Delhi present Dalkhai – the folk dance of Odissa. The tribals of Sambalpur in West Odisha perform the Dalkhai dance during their festivals of Bhaijuntia and Phagun Puri. The dance which is a tribute to Goddess Dalkhai, reflects the colourful culture and tradition of the Sambalpur tribes.

The dance form moves around religious themes, mainly of Radha-Krishna, Ramayana, Mahabharata, etc. Through this dance, the young girls pray to Goddess for a suitable and handsome match for themselves. The women artists adorn the colourful sambalpuri constumes like saree, patka, gamachha and ghungroo whereas the men are seen performing this dance in dhoti, bundy and gamchha.

- Sarvodaya Kanya Vidyalaya and Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya, Gandhinagar, Delhi

सोंगी मुखावटे नृत्य

महाराष्ट्र का सोंगी मुखावटे नृत्य चैत्र पूर्णिमा के समय देवी की पूजा का एक अभिन्न अंग है । इस नृत्य को यह नाम नरसिंह, कालभैरव और बेताल की भूमिका को चित्रित करते हुए नर्तकों द्वारा पहने जाने वाले मुखौटों से मिला है । नर्तक ढोल, पवारी और सम्बल जैसे परम्परागत वाद्य यन्त्रों की ताल पर अपने-अपने हाथों में छड़ियाँ लेकर यह नृत्य करते हैं । पवारी नर्तक हरी लड़ियों की बनी हुई रंग-बिरंगी पोशाकों और अपने सिरों पर धारित मोरपंखों से अपनी प्रस्तुति की शोभा बढ़ा रहे है ।

दक्षिणी मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

Songi Mukhawate Dance

The Songi Mukhawate dance of Maharashtra is an integral part of the worship of Devi at the time of Chaitra Purnima. This name of the dance is derived from the masks - worn by the dance performers, portraying the roles of Narsingh, Kal Bhairav and Betal. The other performers, wielding sticks in their hands, dance on the beats of traditional musical instruments like dhol, pawari and sambal. The pawari players adorn the performance through their colourful costume, made of green ropes and peacock feathers, worn on their heads.

- South Central Zone Cultural Centre, Nagpur

निर्मल गंगा

आर्मी पब्लिक स्कूल, दिल्ली कैंट के छात्र सदियों से भारतीय उप-महाद्वीप में जीवन प्रदान करने वाली पवित्र गंगा नदी के अतीत की महिमा की एक आकर्षक प्रस्तुती कर रहे हैं । वे आहत हैं कि इस पवित्र नदी के पावन जल के मूल गुणों को अज्ञानता, लालच तथा आधुनिक समय के अंधाधुंध औद्योगिकीकरण के कारण नष्ट कर दिया गया है ।

भारत के युवा अनवरत कार्य तथा जागरूकता अभियानों के द्वारा मां गंगा का कायाकल्प करने की शपथ लेते है ताकि जनसामान्य को इस पावन नदी को होने वाले खतरों और इसके अत्यावश्यक पुनरूद्धार के बारे में अवगत कराया जा सके । इस प्रस्तुति का उद्देश्य उक्त संकल्प को प्रसारित करना तथा भारत के जनमानस को इस पावन नदी की पूर्ववर्ती महिमा को पुन: उजागर करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को सूचित करना है ।

- आर्मी पब्लिक स्कूल, दिल्ली कैंट

Nirmal Ganga

The students of Army Public School, Delhi Cantt are making a attractive presentation showing the past glory, of the Holy river, the Ganga that has nurtured life in the Indian sub-continent over centuries. They are pained that the pristine qualities of the rich waters of the sacred river have been sacrificed on account of ignorance, greed and rampant industrialization in the modern times.

The youth of India pledge to rejuvenate 'Mother Ganga' through relentless action and awareness campaigns so as to educate the masses about the threats to the holy river and the need for its exigent revival. Their performance is aimed to put forth their determination and to convey to the people of India their commitment to restore its past glory.

- Army Public School, Delhi Cantt.

●●●

धन्यवाद

Thank You

Designed & Printed by : Graphic Point Pvt. Ltd.
4th Floor, Harbans Bhawan II,
Nangal Rai Commercial Complex New Delhi - 110046
Ph.: +91-11-2852 3517, 4553 4188
E-mail : gppl@graphicpointindia.com

Ministry of Defence
D (Ceremonials) Division